===

AVYAKT MURLI

19 / 11 / 84

===

19-11-84 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

बेहद की वैराग वृत्ति से सिद्धियों की प्राप्ति

सदा अचल और अडोल भव'' का वरदान देने वाले शिव बाबा बोले-

आज विश्व रचयिता अपनी श्रेष्ठ रचना को वा रचना के पूर्वज आत्माओं को देख रहे हैं। चारों ओर की पूर्वज पूज्य आत्मायें बापदादा के सामने हैं। पूर्वज आत्माओं के आधार से विश्व की सर्व आत्माओं को शक्ति और शान्ति प्राप्त हो रही है और होनी है। अनेक आत्मायें पूर्वज पूज्य आत्माओं को शान्ति देवा, शक्ति देवा कह याद कर रही हैं। ऐसे समय पर शान्ति देवा आत्मायें मास्टर शान्ति के सागर, मास्टर शान्ति के सूर्य अपनी शान्ति की किरणें, शान्ति की लहरें दाता के बच्चे देवा बन सर्व को दे रहे हो! यह विशेष सेवा करने के अभ्यासी बने हो वा अन्य भिन्न-भिन्न

प्रकार की सेवाओं में इतने बिजी हो जो इस विशेष सेवा के लिए फुर्सत और अभ्यास कम होता है? जैसा समय वैसे सेवा के स्वरूप को कल्पना सकते हो? अगर किसी को पानी की प्यास हो और आप बढ़िया भोजन दे दो तो वह सन्तुष्ट होगा? ऐसे वर्तमान समय शान्ति और शक्ति की आवश्यकता है। मंसा की शान्ति द्वारा आत्माओं को मन की शान्ति अनुभव करा सकते हो! वाणी द्वारा कानों तक आवाज़ पहुँचा सकते हो लेकिन वाणी के साथ मंसा शक्ति द्वारा मन तक पहुँचा सकते हो! मन का आवाज़ मन तक पहुँचता है। सिर्फ मुख का आवाज़ कानों और मुख तक रह जाता। सिर्फ वाणी से वर्णन शक्ति और मन से मनन शक्ति, मगन स्वरूप की शक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। वह सुनने वाले और वह बनने वाले बन जाते, दोनों में अन्तर हो जाता है तो सदा वाचा और मंसा दोनों साथ-साथ सेवा में रहें। वर्तमान समय विशेष भारतवासियों का क्या हालचाल देखा? अभी शमशानी वैराग की वृत्ति में हैं। ऐसे शमशानी वैराग वृत्ति वालों को बेहद की वैराग वृत्ति दिलाने के लिए - स्वयं बेहद के वैराग वृत्ति वाले बनो।

अपने आपको चेक करो। कभी राग कभी वैराग, दोनों में चलते हैं वा सदा बेहद के वैरागी बने हो? बेहद के वैरागी अर्थात् देह रूपी घर से भी बेघर। देह भी बाप की है न कि मेरी। इतना देह के भान से परे। बेहद के वैरागी कभी भी संस्कार, स्वभाव, साधन किसी के भी वशीभूत नहीं होंगे। न्यारा

बन, मालिक बन साधनों द्वारा सिद्धि स्वरूप बनेंगे। साधन को विधि बनायेंगे। विधि द्वारा स्व-उन्नति की वृद्धि की सिद्धि पायेंगे। सेवा से वृद्धि की सिद्धि प्राप्त करेंगे। निमित्त आधार होगा लेकिन अधीन नहीं होंगे। आधार के अधीन होना अर्थात् वशीभूत होना। वशीभूत शब्द का अर्थ ही है, जैसे भूत आत्मा परवश और परेशान करती है, ऐसे किसी भी साधन वा संस्कार वा स्वभाव वा सम्पर्क के वशीभूत हो जाते तो भूत समान परेशान और परवश हो जाते हैं। बेहद के वैरागी, सदा करावनहार करा रहे हैं, इसी मस्ती में रमता योगी से भी ऊपर - उड़ता योगी होगा। जैसे हद के हठयोग की विधियों से धरनी, आग, पानी सबसे ऊँचा आसनधारी दिखाते हैं। उसको योग के सिद्धि स्वरूप मानते हैं। वह है अल्पकाल के हठयोग की विधि की सिद्धि। ऐसे बेहद के वैराग वृति वाले इस विधि द्वारा देह भान की धरनी से ऊपर, माया के भिन्न-भिन्न विकारों की अग्नि से ऊपर, भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा संग के बहाव में आने से न्यारे बन जाते हैं। जैसे पानी का बहाव अपना बना देता है, अपनी तरफ खींच लेता है। ऐसे किसी भी प्रकार के अल्पकाल के बहाव अपने तरफ आकर्षित न करें। ऐसे पानी के बहाव से भी ऊपर इसको कहा जाता - 'उड़ता योगी'। यह सब सिद्धियाँ बेहद के वैराग की विधि से प्राप्त होती हैं।

बेहद के वैरागी अर्थात् हर संकल्प, बोल और सेवा में बेहद की वृत्ति, स्मृति, भावना और कामना हो। हर संकल्प बेहद की सेवा में समर्पित हो।

हर बोल में नि:स्वार्थ भावना हो। हर कर्म में करावनहार करा रहे हैं - यह वायब्रेशन सर्व को अनुभव हो। इसको कहा जाता है - 'बेहद के वैरागी'। बेहद के वैरागी अर्थात् अपनापन मिट जाए। बाबा-पन आ जाए। जैसे अनहद जाप जपते हैं, ऐसे अनहद स्मृति स्वरूप हों। हर संकल्प में, हर श्वास में बेहद और बाबा समाया हुआ हो। तो हद के वैरागी, शमशानी वैरागी आत्माओं को वर्तमान समय शान्ति और शक्ति देवा बन बेहद के वैरागी बनाओ।

तो वर्तमान समय के प्रमाण बच्चों की रिजल्ट क्या रही - यह टी.वी. बापदादा ने देखी और बच्चों ने इन्दिरा गांधी की टी.वी. देखी। समय पर देखी, नॉलेज के लिए देखी, समाचार के लिए देखी इसमें कोई हर्जा नहीं। लेकिन क्या हुआ, क्या होगा इस रूप से नहीं देखना। नॉलेजफुल बन हर दृश्य को कल्प पहले की स्मृति से देख तो बापदादा ने बच्चों का क्या देखा! बच्चों का दृश्य भी रमणीक था। तीन प्रकार की रिजल्ट देखी।

एक थे - चलते-चलते अलबेलेपन की नींद में सोई हुई आत्मायें। जैसे कोई जोर से आवाज़ होता है वा कोई हिलाता है तो सोया हुआ जाग जाता है लेकिन क्या हुआ! इस संकल्प से कुछ समय जागे और फिर धीरे-धीरे वही अलबेलेपन की नींद। यह तो होता ही है, इस चादर को ओढ़ के सो गए। अभी तो रिहर्सल है। फाइनल तो आगे होना है। इससे और मुंह तक चादर

ओढ़ ली।

दूसरे थे - आलस्य की नींद में सोये हुए। यह तो सब होना ही था वह हुआ, पुरूषार्थ तो कर ही रहे हैं। और आगे भी कर ही लेंगे! संगमयुग में तो पुरूषार्थ करना ही है। कुछ किया है, कुछ आगे कर लेंगे। दूसरों को जागकर देखते रहते। जैसे चादर से मुंह निकाल एक दो को (सोये हुए को) देखते हैं ना। जो नामीग्रामी हैं वह भी इतना ही रफ्तार से चल रहे हैं। हम भी चल रहे हैं। ऐसे दूसरों की कमज़ोरियों को देख फॉलो फादर के बजाए सिस्टर्स और ब्रदर्स को फॉलो कर लेते हैं और उन्हों की भी कमज़ोरियों को फॉलो करते हैं। ऐसे संकल्प करने वाले आलस्य की नींद में सोये हुए वह भी जागे जरूर। उमंग और उत्साह के आधार से आलस्य की नींद को कईयों ने त्याग भी किया। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति में आगे कदम भी बढ़ाया। हलचल ने हिलाया और आगे बढ़े। लेकिन आलस्य के संस्कार बीच-बीच में फिर भी अपनी तरफ खींचते रहते हैं। फिर भी हलचल ने हिलाया, आगे बढ़ाया।

तीसरे थे - हलचल को देख अचल रहने वाले। सेवा के श्रेष्ठ संकल्प में सेवा के भिन्न-भिन्न प्लैन सोचना और करना। सारी विश्व को शान्ति और शक्ति की सहायता देने वाले, साहस रखने वाले। औरों को भी हिम्मत दिलाने वाले। ऐसे भी बच्चे देखे। लेकिन शमशानी उमंग-उत्साह वा

शमशानी तीव्र पुरूषार्थ वा कमज़ोरियों से वैराग वृत्ति, इसी लहर में नहीं चलना। सदा परिस्थिति को स्वस्थिति की शक्ति से परिवर्तन करने वाले, विश्व-परिवर्तक की स्मृति में रहो। परिस्थिति स्थिति को आगे बढ़ावे वा वायुमण्डल मास्टर सर्वशक्तिवान को चलावे। मनुष्य आत्माओं का शमशानी वैराग, अल्पकाल के लिए बेहद का वैरागी बनावे यह पूर्वज आत्माओं का कर्म नहीं। समय रचना, मास्टर रचता को आगे बढ़ावे यह मास्टर रचता की कमज़ोरी है। आपके श्रेष्ठ संकल्प - समय को परिवर्तन करने वाले हैं। समय आप विश्व-परिवर्तक आत्माओं का सहयोगी है। समझा! समय को देखकर, समय के हिलाने से आगे बढ़ने वाले नहीं। लेकिन स्वयं आगे बढ़ समय को समीप लाओ। क्वेश्चन भी बहुतों का उठा कि अब क्या होगा? लेकिन क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करो। अर्थात् अपने को सभी सब्जेक्ट में फुल करो। यह है 'फुलस्टाप'। ऐसे समय पर क्या होगा? यह क्वेश्चन नहीं उठता लेकिन क्या करना है, मेरा कर्त्तव्य ऐसे समय पर क्या है, उस सेवा में लग जाओ। जैसे आग बुझाने वाले आग को बुझाने में लग गए। क्वेश्चन नहीं किया कि यह क्या हुआ। अपनी सेवा में लग गये ना। ऐसे रूहानी सेवाधारी का कर्त्तव्य है अपनी रूहानी सेवा में लग जाना। दुनिया वालों को भी न्यारापन अनुभव हो। समझा! फिर भी समय प्रमाण पहुँच तो गए हो ना। परिस्थिति क्या भी हो लेकिन ड्रामा ने फिर भी मिलन मेला मना लिया। और ही लकी हो गये ना जो पहुँच तो गये हो ना। खुश हो रहे हो ना कि हमारा भाग्य है

जो पहुँच गए। भले आये। मधुबन की रौनक आप सब बच्चे हैं। मधुबन का शृंगार मधुबन में पहुँचा। सिर्फ मधुबन वाले बाबा नहीं, मधुबन वाले बच्चे भी हैं। अच्छा –

चारों ओर के संकल्प द्वारा, स्नेह द्वारा, आकारी रूप द्वारा पहुँचे हुए सर्व बच्चों को बापदादा सदा अचल भव, सदा बेहद के वैरागी, सदा उड़ते योगी भव का वर्सा और वरदान दे रहे हैं। सदा अनहद स्मृति स्वरूप, अलबेले और आलस्य के निद्राजीत, सदा बेहद के स्मृति स्वरूप ऐसे पूर्वज और पूज्य आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।''

दादी जी तथा जगदीश भाई ने विदेश यात्रा का समाचार सुनाया तथा याद प्यार दी

सभी को सन्देश दे अनुभव कराया। स्नेह और सम्बन्ध बढ़ाया। अभी अधिकार लेने के लिए आगे आयेंगे। हर कदम में अनेक आत्माओं के कल्याण का पार्ट नूंधा हुआ है। इसी नूंध से सभी के दिल में उमंग-उत्साह दिलाया। बहुत अच्छा - सेवा और स्नेह का पार्ट बजाया। बापदादा करावनहार भी हैं और साक्षी हो देखने वाले भी हैं। कराया भी और देखा भी। बच्चों के उमंग-उत्साह और हिम्मत पर बापदादा को नाज़ है। आगे भी और आवाज़ बुलन्द होगा। ऐसा आवाज़ बुलन्द होगा जो सभी

कुम्भकरण आँख खोलकर देखेंगे कि यह क्या हुआ! कईयों के भाग्य परिवर्तन होंगे। धरनी बनाकर आये। बीज डालकर आये। अभी जल्दी बीज का फल भी निकलेगा। प्रत्यक्षता का फल निकलने वाला ही है। समय समीप आ रहा है। अभी तो आप लोग गये लेकिन जो सेवा करके आये - उस सेवा के फल स्वरूप वह स्वयं भागते हुए आयेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे चुम्बक दूर से खींचता है ना। ऐसे कोई खींच रहा है। जैसे आदि में अनेक आत्माओं को यह रूहानी खींच हुई कि कोई खींच रहा है, कहाँ जायें। ऐसे यह भी खींचे हुए आयेंगे। ऐसा अनुभव किया ना कि रूहानी खींच बढ़ रही है। बढ़ते-बढ़ते खींचे हुए उड़कर पहुँच जायेंगे वह भी अभी दृश्य होने वाला ही है। अभी यही रहा हुआ है। सन्देश वाहक जाते हैं लेकिन वह स्वयं सत्य तीर्थ पर पहुँचे यह है लास्ट सीन। इसके लिए अभी धरनी तैयार हो गई है, बीज भी पड़ गया है अब फिर निकला कि निकला। अच्छा - दोनों तरफ गये। बापदादा के पास सभी के हिम्मत उल्लास उमंग का पहुँचता है। मैजारटी सेवा के उमंग उत्साह होने के कारण मायाजीत बनने में भी सहज ही आगे बढ़ रहे हैं। फुर्सत होती है तो माया का वार भी होता है लेकिन बिजी रहते हैं - दिल से, ड्यूटी से नहीं। जो दिल से सेवा में बिजी रहते हैं, वह सहज ही मायाजीत हो जाते हैं। तो बापदादा बच्चों के उमंग-उत्साह को देख खुश हैं। वहाँ साधन भी सहज है और इन्हों को प्राप्त भी हो जाते हैं। लक्ष्य है, मेहनत है और साधन भी सहज प्राप्त हैं, तीनों बातों के कारण अच्छी रेस में आगे नम्बर ले रहे हैं। अच्छा है।

लेकिन देश में भी कोई कम नहीं। सभी अपने-अपने उमंग-उत्साह के आधार पर बढ़ रहे हैं। नाम तो देश से ही निकलना है। विदेशों की सफलता भी देश से ही निकलनी है। यह अच्छी स्मृति उन्हों को रहती है और अपनी ड्यूटी समझते हैं कि हमको नाम बाला करना है। विदेश के आवाज़ से भारत को जगाना है। यह लक्ष्य पक्का है और निभा भी रहे हैं। तैयार कर रहे हैं लेकिन अभी विदेश तक आवाज़ है। विदेश का देश तक पहुँचे, वह उड़ते-उड़ते आ रहा है। अभी उड़ रहा है। अभी सफर कर रहा है आवाज़। उड़ते-उड़ते यहाँ पहुँच जायेगा। अभी विदेश में अच्छा फैल रहा है लेकिन विदेश का देश में पहुँचे यह भी होना ही है। अच्छा - जो भी पार्ट बजाया अच्छा बजाया। सदा आगे बढ़ने का सहयोग और वरदान है। हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। जितना अनुभवी बनते जाते हैं उतना और भी अनुभवों के आधार से आगे बढ़ते रहेंगे। करावनहार ने जो जिससे कराया वह ड्रामा अनुसार अच्छे से अच्छा कराया। निमित्त भाव सेवा करा ही लेता है। तो सेवा कराई, निमित्त बने, जमा हुआ और आगे भी जमा होता रहेगा। अच्छा–

पार्टियों से

सदा मिलन मेले में रहने वाले हो ना? यह मिलन का मेला अविनाशी मिलन मेले का अनुभव करा देता है। कहां भी रहते लेकिन मेले में रहते

हो। मेले से दूर नहीं होते। मेला अर्थात् मिलन। तो सदा मिलन मेला है ही। तो ऐसा भाग्यवान कौन होगा जो सदा मेले में रहे! वैसे तो मेला लगता और खत्म हो जाता है लेकिन सदा मेले में कोई नहीं रहता। आप भाग्यवान आत्मायें सदा मेले में रहती हो। सदा मिलन मेला। मेले में क्या होता? - मिलना और झूलना। झूलना भी होता है ना! तो सदा प्राप्तियों के झूले में झूलने वाले। एक झूला नहीं है अनेक प्राप्तियों के अनेक झूले हैं। कभी किस झूले में झूलते, कभी किस झूले में। लेकिन हैं मेले में। ऐसा झूला है जो सदा ही सुख और सर्व प्राप्तियों का अनुभव कराने वाला है। ऐसी कोटों में कोई भाग्यवान आत्मायें हो। पहले महिमा सुनते थे अभी महान बन गए। अच्छा-

==

QUIZ QUESTIONS

==

प्रश्न 1 :- वर्तमान समय किस विशेष सेवा की आवश्यकता है?

प्रश्न 2 :- बेहद के वैरागी के प्रति बापदादा ने क्या समझानी दी ?

प्रश्न 3 :- आधार के अधीन होना अर्थात् वशीभूत होना। वशीभूत शब्द का अर्थ क्या है?

प्रश्न 4 :- क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करने की विधि क्या है?

प्रश्न 5 :- नॉलेजफुल बन हर दृश्य को कल्प पहले की स्मृति से देख तो बापदादा ने बच्चों की क्या रिजल्ट देखी?

FILL IN THE BLANKS:-

(स्नेह, बापदादा, उड़ते, क्वेश्चन, क्वेश्चन, परिवर्तन, नॉलेजफुल, दृश्य, स्मृति, पूज्य, शान्ति, शक्ति, बेहद, सिद्धियों)

1 _____ की वैराग वृत्ति से _____ की प्राप्ति सदा अचल और अडोल भव।

2 अनेक आत्मायें पूर्वज ______ आत्माओं को ______ देवा, ______ देवा कह याद कर रही हैं।

3 _______ बन हर ______ को कल्प पहले की _____ से देखो।

4 _______ भी बहुतों का उठा कि अब क्या होगा? लेकिन _______ को फुलस्टाप के रूप में ______ करो।

5 चारों ओर के संकल्प द्वारा, _____ द्वारा, आकारी रूप द्वारा पहुँचे हुए सर्व बच्चों को ________ सदा अचल भव, सदा बेहद के वैरागी, सदा ______ योगी भव का वर्सा और वरदान दे रहे हैं।

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:- 【✔】【✖】

1 :- आज विश्व रचयिता अपनी श्रेष्ठ रचना को वा रचयिता के पूर्वज आत्माओं को देख रहे हैं।

2 :- तो वर्तमान समय के प्रमाण बच्चों की रिजल्ट क्या रही - यह टी.वी. बापदादा ने देखी और बच्चों ने इन्दिरा गांधी की टी.वी. देखी।

3 :- मधुबन की रौनक आप सब बच्चे हैं। मधुबन का शृंगार मधुबन में पहुँचा। सिर्फ मधुबन वाले बाबा नहीं, मधुबन वाले बच्चे भी हैं।

4 :- बापदादा करनहार भी हैं और साक्षी हो देखने वाले भी हैं।

5 :- जो दिल से सेवा में बिजी रहते हैं, वह सहज ही मायाजीत हो जाते हैं।

==

QUIZ ANSWERS

==

प्रश्न 1 :- वर्तमान समय किस विशेष सेवा की आवश्यकता है?

उत्तर 1 :- वर्तमान समय निम्नलिखित विशेष सेवा की आवश्यकता है :

❶ ऐसे समय पर शान्ति देवा आत्मायें मास्टर शान्ति के सागर, मास्टर शान्ति के सूर्य अपनी शान्ति की किरणें, शान्ति की लहरें दाता के बच्चे देवा बन सर्व को दे रहे हो!

❷ यह विशेष सेवा करने के अभ्यासी बने हो वा अन्य भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवाओं में इतने बिजी हो जो इस विशेष सेवा के लिए फुर्सत और अभ्यास कम होता है?

❸ जैसा समय वैसे सेवा के स्वरूप को कल्पना सकते हो? अगर किसी को पानी की प्यास हो और आप बढ़िया भोजन दे दो तो वह सन्तुष्ट होगा? ऐसे वर्तमान समय शान्ति और शक्ति की आवश्यकता है।

❹ मंसा की शान्ति द्वारा आत्माओं को मन की शान्ति अनुभव करा सकते हो! वाणी द्वारा कानों तक आवाज़ पहुँचा सकते हो लेकिन वाणी के साथ मंसा शक्ति द्वारा मन तक पहुँचा सकते हो!

मन का आवाज़ मन तक पहुँचता है। सिर्फ मुख का आवाज़ कानों और मुख तक रह जाता। सिर्फ वाणी से वर्णन शक्ति और मन से मनन शक्ति, मगन स्वरूप की शक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। वह सुनने वाले और वह बनने वाले बन जाते, दोनों में अन्तर हो जाता है

❺ तो सदा वाचा और मंसा दोनों साथ-साथ सेवा में रहें।

प्रश्न 2 :- बेहद के वैरागी के प्रति बापदादा ने क्या समझानी दी ?

उत्तर 2 :- बेहद के वैरागी के प्रति बापदादा ने समझानी दी कि :

❶ बेहद के वैरागी अर्थात देह रूपी घर से भी बेघर। देह भी बाप की है न कि मेरी। इतना देह के भान से परे।

❷ बेहद के वैरागी कभी भी संस्कार, स्वभाव, साधन किसी के भी वशीभूत नहीं होंगे। न्यारा बन, मालिक बन साधनों द्वारा सिद्धि स्वरूप बनेंगे। साधन को विधि बनायेंगे। विधि द्वारा स्व-उन्नति की वृद्धि की सिद्धि पायेंगे। सेवा से वृद्धि की सिद्धि प्राप्त करेंगे।

❸ निमित्त आधार होगा लेकिन अधीन नहीं होंगे।

प्रश्न 3 :- आधार के अधीन होना अर्थात् वशीभूत होना। वशीभूत शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर 3 :- वशीभूत शब्द का अर्थ है :

❶ जैसे भूत आत्मा परवश और परेशान करती है, ऐसे किसी भी साधन वा संस्कार वा स्वभाव वा सम्पर्क के वशीभूत हो बेहद जाते तो भूत समान परेशान और परवश हो जाते हैं।

❷ सदा करावनहार करा रहे हैं, इसी मस्ती में रमता योगी से भी ऊपर - उड़ता योगी होगा। जैसे हद के हठयोग की विधियों से धरनी, आग,

पानी सबसे ऊँचा आसनधारी दिखाते हैं। उसको योग के सिद्धि स्वरूप मानते हैं। वह है अल्पकाल के हठयोग की विधि की सिद्धि।

❸ ऐसे बेहद के वैराग वृति वाले इस विधि द्वारा देह भान की धरनी से ऊपर, माया के भिन्न-भिन्न विकारों की अग्नि से ऊपर, भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा संग के बहाव में आने से न्यारे बन जाते हैं।

प्रश्न 4 :- क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करने की विधि क्या है?

उत्तर 4 :- क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करने की विधि है :

❶ क्वेश्चन को फुलस्टाप के रूप में परिवर्तन करो। अर्थात् अपने को सभी सब्जेक्ट में फुल करो। यह है 'फुलस्टाप'।

❷ ऐसे समय पर क्या होगा? यह क्वेश्चन नहीं उठता लेकिन क्या करना है, मेरा कर्त्तव्य ऐसे समय पर क्या है, उस सेवा में लग जाओ।

❸ जैसे आग बुझाने वाले आग को बुझाने में लग गए। क्वेश्चन नहीं किया कि यह क्या हुआ। अपनी सेवा में लग गये ना।

❹ ऐसे रूहानी सेवाधारी का कर्त्तव्य है अपनी रूहानी सेवा में लग जाना। दुनिया वालों को भी न्यारापन अनुभव हो।

प्रश्न 5 :- नॉलेजफुल बन हर दृश्य को कल्प पहले की स्मृति से देख तो बापदादा ने बच्चों की क्या रिजल्ट देखे?

उत्तर 5 :- बापदादा ने तीन प्रकार की रिजल्ट देखे :-

❶ एक थे - चलते-चलते अलबेलेपन की नींद में सोई हुई आत्मायें। जैसे कोई जोर से आवाज़ होता है वा कोई हिलाता है तो सोया हुआ जाग जाता है लेकिन क्या हुआ! इस संकल्प से कुछ समय जागे और फिर धीरे-धीरे वही अलबेलेपन की नींद। यह तो होता ही है, इस चादर को ओढ़ के सो गए। अभी तो रिहर्सल है। फाइनल तो आगे होना है। इससे और मुंह तक चादर ओढ़ ली।

❷ दूसरे थे - आलस्य की नींद में सोये हुए। यह तो सब होना ही था वह हुआ, पुरूषार्थ तो कर ही रहे हैं। और आगे भी कर ही लेंगे! संगमयुग में तो पुरूषार्थ करना ही है। कुछ किया है, कुछ आगे कर लेंगे। दूसरों को जागकर देखते रहते। जैसे चादर से मुंह निकाल एक दो को (सोये हुए को) देखते हैं ना। जो नामीग्रामी हैं वह भी इतना ही रफ्तार से चल रहे हैं। हम भी चल रहे हैं। ऐसे दूसरों की कमज़ोरियों को देख फॉलो फादर के बजाए सिस्टर्स और ब्रदर्स को फॉलो कर लेते हैं और उन्हों की

भी कमज़ोरियों को फॉलो करते हैं। ऐसे संकल्प करने वाले आलस्य की नींद में सोये हुए वह भी जागे जरूर। उमंग और उत्साह के आधार से आलस्य की नींद को कईयों ने त्याग भी किया। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति में आगे कदम भी बढ़ाया। हलचल ने हिलाया और आगे बढ़े। लेकिन आलस्य के संस्कार बीच-बीच में फिर भी अपनी तरफ खींचते रहते हैं। फिर भी हलचल ने हिलाया, आगे बढ़ाया।

❸ तीसरे थे - हलचल को देख अचल रहने वाले। सेवा के श्रेष्ठ संकल्प में सेवा के भिन्न-भिन्न प्लैन सोचना और करना। सारी विश्व को शान्ति और शक्ति की सहायता देने वाले, साहस रखने वाले। औरों को भी हिम्मत दिलाने वाले। ऐसे भी बच्चे देखे।

FILL IN THE BLANKS:-

(स्नेह, बापदादा, उड़ते, क्वेश्चन, क्वेश्चन, परिवर्तन, नॉलेजफुल, दृश्य, स्मृति, पूज्य, शान्ति, शक्ति, बेहद, सिद्धियों)

1 _____ की वैराग वृत्ति से _____ की प्राप्ति सदा अचल और अडोल भव।

बेहद / सिद्धियों

2 अनेक आत्मायें पूर्वज ______ आत्माओं को ______ देवा, ______ देवा कह याद कर रही हैं।

पूज्य / शान्ति / शक्ति

3 _______ बन हर ______ को कल्प पहले की _____ से देखो।

नॉलेजफुल / दृश्य / स्मृति

4 _______ भी बहुतों का उठा कि अब क्या होगा? लेकिन _______ को फुलस्टाप के रूप में ______ करो।

क्वेश्चन / क्वेश्चन / परिवर्तन

5 चारों ओर के संकल्प द्वारा, _____ द्वारा, आकारी रूप द्वारा पहुँचे हुए सर्व बच्चों को ________ सदा अचल भव, सदा बेहद के वैरागी, सदा ______ योगी भव का वर्सा और वरदान दे रहे हैं।

स्नेह / बापदादा / उड़ते

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:- 【✔】 【✖】

1 :- आज विश्व रचयिता अपनी श्रेष्ठ रचना को वा रचयिता के पूर्वज आत्माओं को देख रहे हैं। 【✖】

आज विश्व रचयिता अपनी श्रेष्ठ रचना को वा रचना के पूर्वज आत्माओं को देख रहे हैं।

2 :- तो वर्तमान समय के प्रमाण बच्चों की रिजल्ट क्या रही - यह टी.वी. बापदादा ने देखी और बच्चों ने इन्दिरा गांधी की टी.वी. देखी। 【✔】

3 :- मधुबन की रौनक आप सब बच्चे हैं। मधुबन का शृंगार मधुबन में पहुँचा। सिर्फ मधुबन वाले बाबा नहीं, मधुबन वाले बच्चे भी हैं। 【✔】

4 :- बापदादा करनहार भी हैं और साक्षी हो देखने वाले भी हैं। 【✖】

बापदादा करावनहार भी हैं और साक्षी हो देखने वाले भी हैं।

5 :- जो दिल से सेवा में बिजी रहते हैं, वह सहज ही मायाजीत हो जाते हैं। 【✔】